तुलसी प्रज्ञा २००३ ०१ (फोल्डर नं. ०२४५४३)

सम्पादक

डॉ. शान्ता जैन (मुमुक्षु) – हिन्दी

डॉ. जगत राम भट्टाचार्य - अंग्रेजी

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

पुदगलास्तिकाय एक विमर्श – समणी मंगलप्रज्ञा ---------- १

अनुयोगद्वार सूत्र में नय विवेचना – डॉ. अनेकान्त कुमार जैन ----------२१

जैन कर्म सिद्धान्त में अनेकान्त – डॉ. अशोक कुमार जैन ----------३१

प्राकृत कथा साहित्य – उदभव, विकास एवं व्यापकता – डॉ. जिनेन्द्र जैन ---------- ४२

आत्म – समाधि और वैयावृत्य – साध्वी मुदितयशा ---------- ४९

उत्तराध्ययन और गीता में समानता – पं. विश्वनाथ मिश्र---------- ५९

जलों की महत्ता एवं संरक्षण वैदिक अवधारणा- डॉ. नन्दिता सिंघवी ---------- ६५

ध्यान का स्वरुप एवं महत्व तत्त्वार्थ सूत्र में – डॉ. विनोद कुमार पाण्डेय ---------- ७०

Acaranga – Bhasyam - Acarya Mahaprajna ---------- 77

Jain System of Education - Prof. D. N. Bhargava Dr. B.R. Dugar ---------- 94

Courtesans in Jain Literature - Dr. Anil Dhar ---------- 106

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org